

डॉ० ईश्वर चंद 'गंभीर' के काव्य में पर्यावरण चिंतन

दीपा त्यागी

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, इस्माईल नेशनल महिला, पी० जी० कॉलेज, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

'वंदे मातरम्' राष्ट्रीय गीत में वर्णित शस्य श्यामल, सुस्वादिष्ट फल, शीतल जल, खिले हुए पुष्प, लताओं से सुशोभित, हरी-भरी वनस्पति वाली धरती माँ सभी को सुख समृद्धि का वरदान देने वाली है पर आज का कवि कहता है कि "धरती की ओजोन में पड़ने लगी दरार" "प्रकृति रक्षा धर्म हमारा/शुद्ध पर्यावरण हमारा नारा।" हमारा पोषण करने वाली धरा को आज हम क्या दे रहे हैं? बाग काटकर आवास बना रहे हैं, पक्षियों से उनके आवास छीन रहे हैं। वृक्षों के कटान, अशुद्ध जल, दूषित पवन ऐसे विषाक्त वातावरण में जिंदगी कैसे मुस्करा सकती है? मनुष्य की साँसों पर पहरा है। पर्यावरण चिंतक, प्रकृति प्रेमी कवि गंभीर का कहना है कि साँस कम, हो रही घुटन अब प्रदूषण अखरने लगा। सम सामयिक समस्याओं के प्रति सजग कवि जनता का आह्वान करता है कि पर्यावरण शुद्ध रखने के लिए पेड़ लगाने होंगे, नाले, नाली, ताल-तलैया सभी को स्वच्छ रखना होगा। वैसे भी वातावरण शुद्ध होगा तो जिंदगी भी मुस्करायेगी इसलिए हमें जल के क्षय को रोकना है और शुद्ध भी रखना है। संकल्प लेना होगा कि रोगविनाशिनी गंगा को कूड़ा-कर्कट, पॉलिथीन, पन्नी, कैमिकल लगी मूर्तियों बहाकर विषैली नहीं बनायेंगे। साथ ही पर्यावरण शुद्ध रखने के लिए जनसंख्या नियन्त्रण भी अति आवश्यक है क्योंकि आबादी कम होगी तो सीमित संसाधनों की आवश्यकता होगी अन्यथा न तो कृषि योग्य भूमि बचेगी और न ही सभी को शुद्ध जल एवं वायु प्राप्त होगी। आवास की समस्या कृषि भूमि एवं जंगलों को उजाड़ रही है, परिणामस्वरूप प्रदूषण युक्त पर्यावरण मानव जीवन के लिए काल बनकर खड़ा है। कवि कह उठता है—"शुद्ध करो पर्यावरण, कब चेतोगे यार।"

मूल शब्द: पर्यावरण, विषाक्त, रोगविनाशिनी, क्षय

प्रस्तावना

वर्तमान समय में भारत का राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' अपनी सृजनात्मकता के 150 वर्ष पूर्ण कर चुका है जिसके उपलक्ष्य में देश उत्साहित होकर उत्सव मना रहा है। आजादी का मूल मंत्र बना यह गीत चर्चा का विषय भी बन गया है। इसमें वर्णित मातृभूमि की शस्य श्यामलता, सुस्वादिष्ट फल, शीतल जल, मलयगिरि के चंदन के समान शीतलता, हरी-भरी वनस्पति किसे अपनी ओर आकर्षित नहीं करती। जब यह गीत लिखा गया तब हमारे देश की धरा और आकाश कितने स्वच्छ और पावन रहे होंगे, तभी तो गीतकार की हृदयगत भावनाएँ इतने सुंदर शब्दों में अभिव्यक्त हुई हैं और आज की स्थिति की बात करें तो कवि हृदय कह उठता है—"धरती की ओजोन में पड़ने लगी दरार, शुद्ध करो पर्यावरण, कब चेतोगे यार।"¹ ये पंक्तियाँ सुप्रसिद्ध कवि, गीतकार, गजलकार डॉ० ईश्वर चंद गंभीर की हैं, जिन्होंने नामानुकूल गम्भीरता से समसामयिक विषयों पर लेखनी चलाकर जन-जन को जागरूक करने का प्रयास किया। आज की ऐसी ही एक चिन्तनीय एवं गंभीर समस्या है 'प्रदूषित पर्यावरण'। अपने अतीत का स्मरण करते हुए कवि लिखता है कि "मैं बचपन में जब गाँव में कुएँ पर कपड़े धोता व नहाता था तो सोचता था कि कैसी अद्भुत लीला है राम की, जिस पानी का उपयोग पूरा गाँव कर रहा है आखिर वह आ कहाँ से रहा है? इतने पेड़-पौधे खड़े हैं उन्हें कौन सींच रहा है? धीरे-धीरे उम्र बढ़ती गई, पढ़ने लगे-समझने लगे-—-—- चारों तरफ फूलों से फैलती खुशबू, घर-घर-बाग-खलियानों में तितली व भँवरों के झुंड आपस में बसंत की बातें करते घूमते थे। मानो यही स्वर्ग है—मगर आज सब कुछ उल्टा हो रहा है, हमने अपने स्वार्थ और सुखों के लिये प्रकृति से छेड़-छाड़ प्रारम्भ कर दी है।"² निस्संदेह समाज का जागरूक प्राणी होने के कारण कवि अपने पर्यावरण को लेकर चिन्तित है। गम्भीर जी के पर्यावरण चिंतन, 'सुलगती धरती' काव्य संग्रह एवं अनेक मुक्तक 'पर्यावरण बचाओ' की अलख जगाते हुए समाज को समर्पित हैं।

धरती माँ की वंदना

भारत देश की पावन धरा, उसके चारों ओर फैला प्राकृतिक सौन्दर्य किसके मन को आह्लादित नहीं करता? आगंतुक भी इस धरा के सुरम्य वातावरण से आकर्षित होकर यहाँ आते हैं। प्रकृति की गोद में पला बढ़ा मानव अपने चारों ओर के वातावरण के प्रति सजग और जागरूक था पर वर्तमान जीवन की विडम्बना है कि हमारी साँसों पर भी पहरा है। हम स्वयं उत्तरदायी हैं—कारण—अतिमहत्वाकांक्षी होना, इस विषाक्त वातावरण में जीवन यापन करने को विवश कवि भी अपनी धरती माँ की वंदना कर उठता है—

"प्रकृति रक्षा धर्म हमारा
शुद्ध पर्यावरण अपना नारा
तुमसे माँ बेटे का नाता
जय-जय-जय हे धरती माता।"³

माँ अपनी संतान का पोषण करती है जीवन के सारे दुःख उसके और सारे सुख संतान पर न्यौछावर कर देती है, उसी प्रकार यह धरती माँ भी हमारा पोषण करती है। अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में भूमि सूक्त है, जिसमें पृथ्वी की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है—'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।' माँ संतान का पोषण करती है तो क्या संतान का दायित्व नहीं है कि वे भी उसकी स्वच्छता, सुख, स्वास्थ्य का ध्यान रखें। 'औद्योगिक प्रगति तथा आर्थिक विकास की प्रतिस्पर्धा हमें निरन्तर प्राकृतिक सौन्दर्य एवं इसकी सरलता से दूर ही ले जा रही है। हरियाली का स्थान कंकरीट के जंगल लेते जा रहे हैं। यद्यपि मनुष्य ही नहीं वरन् समस्त जीवधारियों की शारीरिक संरचना, प्राकृतिक व्यवस्था से पूर्ण रूपेण सामंजस्य रखती है, लेकिन आवश्यक नहीं कि माननीय कृत्य एवं गतिविधियाँ भी मानव जीवन के अनुकूल ही हों।"⁴

मानवेतर प्राणियों की चिंता

वृक्षों का कटान, अशुद्ध जल, दूषित पवन ऐसे विषैले वातावरण में जिन्दगी कैसे मुस्कराये? दिन प्रतिदिन बढ़ता हुआ प्रदूषण मानव का ही जीना दूभर नहीं कर रहा है अपितु पशु-पक्षी भी बैचन एवं आहत हैं। कवि के आहत हृदय में उठने वाली अनुभूतियाँ कहने के लिए, लिखने के लिए विवश करती हैं तभी तो रचनाकार संवेदनशील होकर कह उठता है—

“फूल खिलते नहीं मुस्कराते नहीं, अब बसंतों के उत्सव भी भाते नहीं।

इतनी मैली है पर्यावरण की चूनर, देख तितली, भ्रमर गुनगुनाते नहीं।।⁵

मधुर, मीठी एवं आह्लादित करने वाली कोयल की कूक भी अब कम सुनाई पड़ती है। पूर्व के समय प्रातःकाल बाग-बगीचों में अनेक बार कोयल के स्वर ने कानों में मधुरता का संचार किया है लेकिन अब स्थिति इसके विपरीत हो गयी है हम सभी इससे परिचित हैं, कवि हृदय बेबाक होकर कह देता है—

“बाग काटकर बना रहे आवासों को।

आम कटे कोयल का गाना बंद हुआ।।”⁶

पक्षियों के आशियाने मानव ने ही छीन लिये हैं। किसी व्यक्ति का घर छीन लिया जाये तो उसकी चीख पुकार दूर तक जाती है जबकि इंसान बेजुबानों के आशियाने छीनने में जरा सा भी संकोच नहीं करता। इसकी चिंता गंभीर जी को है—

“जिनके परिवार के घोंसले हैं यहाँ

सोचिये वो परिन्दे कहाँ जायेंगे।।”⁷

वृक्षों के कटान पर रोष

हमारे पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण अंग पक्षी भी है। उनकी चहचहाहट, कुहुक वातावरण में तो मधुरता का संचार करती ही है और न जाने कितने कीट पतंग उनका भोजन होते हैं जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण स्वच्छ एवं मनोरम रहता है। वृक्षों का कटान रुकने से एक ओर शुद्ध वायु, फल-फूल और छाया प्राप्त होगी तो दूसरी ओर पशु-पक्षियों को भी बसेरा प्राप्त होगा। पक्षियों का तो नीड़ वृक्षों पर ही बनता है और इंसान है कि इंसानियत को तार-तार कर रहा है। मनुष्य इतना अधिक महत्वाकांक्षी हो गया है कि वह जंगल को उजाड़ने में ही तत्पर है। वर्तमान समय में शिक्षा का प्रचार-प्रसार बढ़ा है, विज्ञान के प्रति आकर्षण भी बढ़ा है, तकनीकी दृष्टि से हम ऊँची उड़ान भर रहे हैं पर ऐसे ज्ञान का क्या लाभ जो जीवन को ही जंजीरों में जकड़ दे। जल, जंगल, जमीन के लिए अनेक स्थानों पर अशिक्षितों का संघर्ष रहता है तथाकथित शिक्षित कहे जाने वाला वर्ग जंगलों को जड़ से उखाड़ने के लिए कटिबद्ध है। कवि का कहना उचित है कि “जब से जंगल उजाड़ने लगा, ताप सूरज का बढ़ने लगा।।”⁸ इस ताप के बढ़ने का दुष्परिणाम हम सभी झेल रहे हैं अभी तक दिल्ली के प्रदूषित होने की बात करते थे आज मेरठ शहर भी उसी श्रेणी में आ गया है। ये तो अभी शुरुआत है यदि साँस के रोगियों के आँकड़े देखे तो आश्चर्य होगा कि दिन प्रतिदिन संख्या बढ़ती जा रही है। “डॉक्टरों ने चेताया है कि विषैली हवा से साँस सम्बन्धी गंभीर समस्याएँ बढ़ रही हैं। हृदयाघात और स्ट्रोक का जोखिम भी बढ़ रहा है और मधुमेह और उच्च रक्तचाप को नियंत्रण में रखना मुश्किल हो रहा है। लम्बे समय तक विषैली हवा के सम्पर्क में रहने से बच्चों में फेफड़ों को स्थायी नुकसान हो सकता है।।”⁹ प्रातः काल स्वच्छ एवं शुद्ध वातावरण में भ्रमण के इच्छुक व्यक्ति अब भयभीत होने

लगे हैं, उनकी चिंता स्वाभाविक है। कवि उनकी चिंता में चिंतित—

“साँस कम, हो रही घुटन

अब प्रदूषण, अखरने लगा।।”¹⁰

साहित्यकार के उपरोक्त शब्द गहन चिंतन के लिए विवश करते हैं? कैसे दम घोटू वातावरण में हम साँस ले रहे हैं और आने वाली पीढ़ी को क्या दे रहे हैं? हमें संकल्प लेना होगा कि विरासत में देकर जायें तो स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण। सर्वप्रथम वृक्षों को बचाने के लिए अग्रसरित हों। आज वृक्षों का स्थान गमलों में लगने वाले पौधों ने ले लिया है। गमले घरों की सजावट के लिए रखते हैं और पेड़ क्या घरों को कुरुप बनाते हैं? इस सोच को बदलना होगा। कविवर रहीम ने लिखा था—“तरुवर फल नहीं खात हैं” अर्थात् वृक्ष परहित की भावना से फलता फूलता है और हम स्वार्थ में अंधे होकर धरा का परिधान अर्थात् वृक्षों को काटने में लिप्त हैं, ‘धरती का परिधान पेड़ हैं’ कविता में डॉ० गंभीर कहते हैं—

“फल देकर के भूख भगाते, पथिक छाँव ले आते—जाते

फूलों से खुशबू बिखराते, कटने पर रोते चिल्लाते।।”¹¹

वृक्ष हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। वृक्षों के माध्यम से फल-फूल, छाया, सुख-सुविधा के अनेक साधन तो प्राप्त होते ही हैं, इसके साथ ही हमारी चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद भी इन्हीं वृक्षों से प्राप्त जड़ी-बूटियों पर आधारित है। नीम, तुलसी, अर्जुन, अश्वगंधा, अशोक, चंदन, आंवला, बेल, हल्दी, जामुन आदि अनेक वृक्ष हमें जीवन रक्षक औषधि प्रदान करते हैं। परहित के लिए जीवन धारण करने वाले वृक्ष इतने उपयोगी हैं तो हमें परमार्थ ना सही स्वार्थी बनकर ही इनकी रक्षा करनी चाहिए। फल-फूल, छाया की दृष्टि से, औषधि की दृष्टि से पेड़ों का संरक्षण करना चाहिए और यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पेड़ कटने से धुंध दिखाई देती है तथा हवाएँ स्वच्छ न रहकर विषैली हो जाती हैं। कवि गहरी चिन्ता व्यक्त करता है—

पेड़ कटने लगे वन सिमटने लगे।

आज बारूद बम रोज फटने लगे।।¹²

कवि स्वयं संकल्प लेता है और आम जन को भी संकल्प लेने के लिए प्रेरित करता है कि हम वृक्षों का कटान नहीं करेंगे साथ ही नये वृक्ष लगाने की ओर अग्रसर होंगे। जनता का आह्वान करते हुए डॉ० गंभीर जी लिखते हैं—

“वन, उपवन हम काट रहे हैं, हमको ज्ञान नहीं है ये

जो अब तक फल-फूल दिये हैं क्या उद्यान नहीं है ये

हो जाओ गंभीर नहीं तो फल कैसे हम खायेंगे

पेड़ नहीं होंगे तो छाया कैसे हम सब पायेंगे।।”¹³

पर्यावरण प्रदूषण का कारण जनसंख्या

कवि इस समस्या के पीछे एक और कारण से भली-भाँति परिचित है वह है ‘जनसंख्या’। बढ़ती आबादी ने खेत खलिहानों को छिन्न-भिन्न किया है, कृषि योग्य भूमि कम होती जा रही है क्योंकि उन पर भी आवास बन गये हैं। अगर भविष्य में जनसंख्या नियन्त्रण नहीं हुआ तो अन्न-जल की कमी भी होगी इसीलिए सजग और सचेत रहते हुए इस ओर भी कदम बढ़ाना होगा, जीवन हँसते-मुस्कराते जियें ना कि बोझ समझकर यह तभी संभव होगा जब पर्यावरण स्वस्थ सुंदर होगा कृषि योग्य भूमि बनी रहेगी। कवि कहता है कि—

पर्यावरण शुद्ध रखने को पेड़ लगाने होंगे।
नाले, नाली, ताल-तलैया साफ कराने होंगे।” 14

प्रसिद्ध पर्यावरणविद् डॉ० अनिल प्रकाश जोशी का कहना है कि “वृक्षारोपण को केवल वृक्ष लगाने और उन्हें जीवित रखने भर तक सीमित समझ लिया—जबकि वृक्ष की असली परिभाषा उसके मिट्टी, हवा, जल से सम्बन्ध और बदले में वह पारिस्थितिक योगदान क्या देता है, यही है। यदि यह संतुलन बिगड़ा तो लगाया गया वृक्ष लाभ के बजाय हानि पहुँचा सकता है। आज विभिन्न अध्ययन बताते हैं कि शहरों में बढ़ते प्रदूषण के कारण किन वृक्ष प्रजातियों का चयन होना चाहिए—यह अध्ययन महत्वपूर्ण है, परन्तु यह भी ध्यान देना चाहिए कि इसकी मात्रा व उसका अन्य प्रदूषण स्रोतों की तुलना में प्रभाव क्या है। शहरों में गाड़ियाँ, उद्योग, एयर कंडीशनर ये प्रदूषण के मुख्य स्रोत हैं, न कि वृक्ष।” 15

जल संरक्षण एवं शुद्धता पर बल

पर्यावरण के चिंतक साहित्यकार जल की स्वच्छता एवं संरक्षण पर भी बल देते हैं। जल की कमी एवं अशुद्धता वर्तमान समय की विकट समस्या है। आज से अनेक वर्ष पूर्व कविवर रहीमदास जी ने लिखा था—“रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून” ऐसा प्रतीत होता है कि कवि को अनुमान हो गया था कि आने वाला समय जल संकट का होगा। इस पंक्ति का अभिधेयार्थ तो इसी ओर संकेत करता है। ‘जल ही जीवन है’ सभी भली-भाँति परिचित हैं फिर भी अनावश्यक रूप से जल क्षय किया जाता है। जल संरक्षण पर फिल्मकारों द्वारा भी ‘एक अंक’, ‘जल’ जैसी फिल्मों का निर्माण किया गया है पर मानव का उनके प्रति उपेक्षा भाव ही रहा। अपनी गाड़ी धोने में भी कई लीटर पानी बहा देते हैं। अनावश्यक रूप से टंकियों से बहता पानी मिल जायेगा। ये धनिक वर्ग के ठाट हैं जबकि निम्न मध्यम एवं निम्न वर्ग पानी के लिए तरसता है। हमारे देश के कई गाँव ऐसे मिल जायेंगे जो दूर स्थानों से पानी लाकर अपना जीवन यापन कर रहे हैं या फिर पोखरों में एकत्रित अशुद्ध जल पीने के लिए विवश हैं। कहते हैं कि बूंद-बूंद से घड़ा भरता है यदि प्रत्येक प्राणी बूंद-बूंद जल बचाये तो धरा का कोई भी प्राणी वंचित ना रहे। कुछ गाँवों में लोगों ने तालाबों और जोहड़ों का अस्तित्व ही समाप्त कर दिया है। इस विडम्बनापूर्ण स्थिति ने ही कवि को उद्बलित किया है—

जल जीवन है इसे बचाओ
जोहड़ और तालाब बनाओ
सूख ना जाये भरा समन्दर
ऐसा ना हो कल पछताओ
पानी ना बेकार बहायें।” 16

कवि की चिन्ता घटता हुआ जल स्तर तो है ही साथ ही उसे ज्ञात है कि बंद बोटलों में बिकता हुआ पानी एक दिन इतना मूल्यवान हो जायेगा जो कि आम आदमी विशेषतः निर्धन के लिए दुर्लभ हो जायेगा तब क्या निर्धन प्यासा ही मर जायेगा—

पैसों में एक दिन पानी बिक जायेगा
जो निर्धन है वो प्यासा मर जायेगा
नाली में न आज बहायें पानी को।” 17

कवि जनसाधारण को सचेत करता है कि हमारे तालाब, पोखर फिर से जीवित हों, पानी के कुएँ हों, जल संरक्षण करने की आदत बने तभी हम इस समस्या से उबर सकते हैं अन्यथा नहीं।

आने वाले समय की भयावहता को सोचते हुए अपनी गज़ल के माध्यम से संदेश देते हुए डॉ० गम्भीर कहते हैं—

“वातावरण हो शुद्ध तो हंसती है जिन्दगी।
जब जल ही आज बल है तो पहले ये बल बचा।।” 18

नमामि गंगे

‘गंगा’ नदी का हम भारतीयों के जीवन में क्या महत्व है इसका पता इस बात से चलता है कि हम ‘गंगा मैया’ या ‘माँ गंगे’ कहकर उसकी आराधना करते हैं, उसके प्रति नतमस्तक रहते हैं। एक ओर हमारी प्रबल आध्यात्मिकता है तो दूसरी ओर उसकी पावनता, स्वच्छता को दूषित करने की होड़। कूड़ा-ककट, पन्नी, प्लास्टिक के थैले, केमिकल लगाकर बनी पूजित मूर्तियों का विसर्जन, उद्योगों के अवशेष आदि से गंगा को मैला-विषैला बनाने में कोई परहेज नहीं करते। मानवीय अनुचित कृत्य के परिणामस्वरूप रोगविनाशिनी गंगा अपने अमृतमय स्वभाव को छोड़कर शनैः शनैः रोगाणु हो जायेगी। कविवर भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने अपनी कविता ‘गंगा-वर्णन’ में गंगा की पावनता, उज्वलता का वर्णन करते हुए उसे तीनों भय दूर करने वाली कहा—

“सुभग स्वर्ग—सोपान सरिस सबके मन भावत।
दरसन मज्जन पान त्रिविध भय दूर मिटावत।।” 19

पावन गंगा जल हमें वरदान स्वरूप प्राप्त हुआ है। गंगा की महिमा का गुणगान देव, ऋषि, तपस्वी, योगी, ज्ञानी करते आये हैं। गीतकारों ने ‘गंगा तेरा पानी अमृत’ “मानो तो मैं गंगा माँ हूँ” जैसे गीत लिखकर जन-जन में गंगा के प्रति श्रद्धा एवं स्नेह-आदर का भाव जागृत किया था। आज वही पावन गंगा मानो अपनी शुद्धता, सुरक्षा, स्वच्छता की गुहार लगा रही है। मानव, जीव-जंतु, शस्य श्यामल धरा सभी गंगा के विषैलेपन में समाहित हो जायेंगे। ‘माँ गंगा’ की इस दुर्दशा पर कवि का खिन्न मन कह उठा है—

आज उसी गंगा को किया प्रदूषित है
नहीं सोचते गंगा से सबका हित है
आँख भगीरथ की देखो होती नम है।” 20

रोगविनाशिनी, पापनाशिनी, शीतल, पावन गंगा हम भारतीयों की आस्था का प्रतीक, हमारे ही कृत्यों से अपावन हो जाये यह हमारे लिए शर्म की बात है। गंगा माँ को पूर्व की भाँति स्वच्छ, निर्मल, सुरक्षित बनाने के लिए सभी को एकजुट होकर प्रयास करने होंगे। डॉ० गम्भीर गंगा की पीड़ा को आत्मसात् करते हुए सभी भारतीयों का आह्वान करते हैं—

कितने हैं उपकार तेरे माँ गंगे भूल ना पायेंगे
तेरी पीड़ा सबकी पीड़ा इसको दूर हटायेंगे
हो जाओ गंभीर, काम ये हमको करना सारा है
नमामि गंगे, नमामि गंगे, सारा देश पुकारा है।” 21

गंगा नदी की पावनता की बात करना ही पर्याप्त नहीं है, यमुना में उठते झाग, अन्य नदियों में फँका जाता हुआ कूड़ा-ककट प्रदूषण को दावत देता है जिसके फलस्वरूप अनेक बीमारियाँ सिर उठाने लगती हैं और अन्ततः स्वयं मानव ही उन रोगों से ग्रस्त होकर या तो दर्द एवं पीड़ा का जीवन जीता है या असमय काल का ग्रास बन जाता है। “कुछ विपत्तियाँ ऐसी होती हैं जो शस्त्र प्रहार की तरह तत्काल प्राण संकट उत्पन्न करती हैं, कुछ क्षय रोग की तरह अविज्ञात रहती हैं और धीरे-धीरे गलाती,

घुलाती, मरण के मुख में धकेलती हैं। जनसंख्या वृद्धि, वायु प्रदूषण, अणु विकिरण, कोलाहल, रासायनिक विषाक्तता, नशे जैसे संकट होते हैं जो गलाकर समस्त मानव समाज को विनाश के गर्त में धकेलते जा रहे हैं।”²²

निष्कर्ष

आज मानव जिस पर्यावरण में साँस ले रहा है उस पर्यावरण में है—बढ़ता कोलाहल, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, जनसंख्या विस्फोट, विषैली गैसें जो शनैः—शनैः उसे विनाश की ओर धकेल रहे हैं। एक पुराना गीत स्मरण हो आता है “मेरे देश में पवन चले पुरवाई। अंबुआ की डाली पे कोयल, गीत सुनाएँ कोमल—कोमल। मेरे खेत की मिट्टी ने सोने की सूरत पाई।”²³ आज के वातावरण में ये लिखते हुए, गाते हुए संकोच होता है। आकाश में धुएँ के बनते हुए गुच्छे, धुंध में समाये हुए पेड़—पौधे, पंछी सभी स्तब्ध—जीवन एक मुस्कराहट के लिए लालायित, तेज रफ्तार दौड़ती जिंदगी में सुकून के लिए उत्सुक मानव। ऐसे वातावरण के भोगी, पर्यावरण चिंतक कवि गंभीर कहते हैं—जो लाती थी प्रेम संदेश। दूषित वो पुरवाई/फूल, कली सारे मुझाये/कैसी आफत आई।” इस आफत का मूल कारण जनसंख्या है—बढ़ती जनसंख्या सीमित साधन। कवि का मानना है कि “यदि हम सीमित हो जायें, तो पेड़ों को क्यों कटवायें।” जनसंख्या कम होने से आवासीय समस्या समाप्त हो जायेगी। कृषि योग्य भूमि का उपयोग आवास के लिए नहीं बल्कि अन्न उपजाने के लिए होगा। कवि गंभीर के विषय में आर०के० भटनागर जी का कथन सत्य है कि “डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’ हमारे शहर क्या, देश के प्रतिष्ठित कवियों में से एक ऐसे कवि हैं, जिनकी लेखनी हमेशा वर्तमान समस्याओं को लेकर कुछ ना कुछ जागरुकता के लिए नया सृजन करती रहती है—‘सुलगती धरती’ लोगों को पेड़ लगाने, जल बचाने, तालाब बनाने, प्लास्टिक मुक्त भारत को बनाने, अपनी नदियों को स्वच्छ रखने आदि के लिए प्रेरित करती है।”²⁴ निःसंदेह गजलकार, कवि ईश्वर चंद गंभीर जी की लेखनी से निकला एक—एक शब्द अपने पर्यावरणीय परिवेश को स्वच्छ, सुन्दर, स्वास्थ्यवर्द्धक बनाने के लिए प्रेरित करता है। उनका काव्य समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

सन्दर्भ

1. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’—पर्यावरण चिंतन—पृष्ठ 113
2. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— पर्यावरण चिंतन—अपनी बात
3. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’—सुलगती धरती—पृष्ठ सं० 09
4. बी०डी० शर्मा—पर्यावरण चिंतन—काव्य—वातायन
5. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’—सुलगती धरती—पृष्ठ सं० 50
6. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— सुलगती धरती—पृष्ठ सं० 93
7. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— पर्यावरण चिंतन पृष्ठ सं० 05
8. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— सुलगती धरती पृष्ठ सं० 110
9. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— सुलगती धरती पृष्ठ सं० 110
10. दैनिक जागरण समाचार पत्र 5 दिसम्बर 2025 पृ० 2
11. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— पर्यावरण चिंतन—पृष्ठ 16
12. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— पर्यावरण चिंतन—पृष्ठ 22
13. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— पर्यावरण चिंतन—पृष्ठ 45
14. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— पर्यावरण चिंतन—पृष्ठ 14
15. डॉ० अनिल जोशी पर्यावरणविद्—दैनिक जागरण समाचार पत्र 30 नवम्बर 2025 (झंकार पृष्ठ)
16. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— पर्यावरण चिंतन—पृष्ठ 26
17. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— पर्यावरण चिंतन—पृष्ठ 28
18. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— पर्यावरण चिंतन—पृष्ठ 62
19. कवि भारतेन्दु हरिश्चंद्र – गंगा वर्णन (नाटक सत्य हरिश्चंद्र)

20. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— पर्यावरण चिंतन—पृष्ठ 10
21. डॉ० ईश्वर चंद ‘गंभीर’— सुलगती धरती—पृष्ठ 70
22. डॉ० आर० एस० श्रीवास्तव—विज्ञान गरिमा ‘सिंधु’, वर्ष—2003 संयुक्तांक 46—47, पृ० 97
23. गीतकार आनंद बख्शी—फिल्म ‘जिगरी दोस्त’
24. आर० के० भटनागर—भूमिका, ‘सुलगती धरती’—पृष्ठ 03